IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "टी.एस.इलियट : निर्वैक्तिकता एवं परंपरा का सिद्धान्त"

**Dr. Maheshkumar J. Vaghela**

Assistant Professor (HindI)

Government Arts College, Vallabhipur

Gujarat

***Abstract:*** **कवि और आलोचक की दृष्टि से इलियट का महत्व आधुनिक साहित्य में महत्वपूर्ण रहा है। वह जितने बडे आलोचक थे उतने ही बडे कवि थे। अंग्रेजी आलोचना के क्षेत्र में जैसे उसने एक नया युग स्थापित किया था। साहित्य संबंधी महत्व के प्रश्नों पर नये सिरे से विचार किया था। बीसवीं सदी के अंग्रेजी साहित्य में इलियट का महत्वपूर्ण स्थान है। इलियट मूलतः कवि थे। अपने साहित्य चिंतन को उन्होंने "वर्कशॉप क्रिटिसिजम" कहा था। इलियट के आलोचनात्मक विचारों का पहला महत्वपूर्ण निबंध परंपरा और व्यक्तिगत प्रतिभा (ट्रेडीशन एंड इंडिविजुअल टैलेंट) नामक पुस्तक सन 1919 में प्रकाशित हुई थी। इसी क्रम में उनके दो निबंध "द परफेक्ट क्रिटिक" और "इंपरफेक्ट क्रिटिक" प्रकाशित हुई थी। यह सारे निबंध सन 1920 में प्रकाशित इलियट की पुस्तक "द सेक्रेट वर्ल्ड" में संकलित है। इलियट वास्तविक ख्याति 'द वेस्टलैंड' द्वारा प्राप्त हुई। इलियट पर एजरा पाउंड फ्रांसीसी प्रतीकवादी कवि का प्रभाव देखा जा सकता है। समीक्षा के क्षेत्र में इलियट के विचारों ने एक क्रांति उत्पन्न कर दी। उनके विचारों ने पाश्चात्य समीक्षा को झकझोर कर रख दिया। उनके विचार विवादास्पद भी रहे हैं। टी.एस.इलियट कवि और आलोचक दोनों ही रूपों में आधुनिक अंग्रेजी साहित्य में विख्यात है। अपने आलोचनात्मक निबंधों में इन्होंने जिन काव्यगत विशेषताओं और सिद्धांतों का उल्लेख किया है उन्हीं को अपने काव्य का व्यवहारिक रूप प्रदान किया है। अंग्रेजी साहित्य में चले आ रहे स्वच्छतावाद खंडन करते हुए क्लासिकल मत का प्रतिपादन किया।**

***Index Terms – निर्वैक्तिकता ,परंपरा***

विषय प्रवेश :

टी.एस. इलियट नोबेल-पुरस्कार-विजेता (साहित्य) तथा आधुनिक युग के महानतम अंग्रेजी आलोचक, नाट्यकार और कवि थे। टी.एस. इलियट **26** सितंबर 1888 को सेंट लुइस मिसौरी संयुक्त राज्य अमेरिका में जन्मे थे। उनके पिता हेनरी वेयर इलियट एक उच्च शिक्षित बैंक मैनेजर थे। जबकि माँ चार्लोट चैम्बर्लेन एक उच्च शिक्षित महिला थी। टी.एस. इलियट की मूल शिक्षा अमेरिका में हुई थी, जहां वे हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से अपनी स्नातक डिग्री प्राप्त करते हुए इतिहास, संस्कृत और फिलोसोफी में विशेषज्ञ हुए। 1905 में टी.एस.इलियट अंग्रेजी में शिक्षा पाने के लिए इंग्लैंड चले गए। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से अपनी शोधकर्ता डिग्री प्राप्त की थी । इंग्लैंड में एक अधिकृत नौकरी स्वीकार की और फिर बाद में इंग्लैंड में स्थायी हो गये थे।

कवि और आलोचक की दृष्टि से इलियट का महत्व आधुनिक साहित्य में सर्वमान्य रहा है। वह जितने बडे आलोचक थे उतने ही बडे कवि थे। अंग्रेजी आलोचना के क्षेत्र में जैसे उसने एक नया युग स्थापित किया था। साहित्य संबंधी महत्व के प्रश्नों पर नये सिरे से विचार किया था। बीसवीं सदी के अंग्रेजी साहित्य में इलियट का महत्वपूर्ण स्थान है। इलियट मूलतः कवि थे। अपने साहित्य चिंतन को उन्होंने "वर्कशॉप क्रिटिसिजम" कहा था। इलियट के आलोचनात्मक विचारों का पहला महत्वपूर्ण निबंध परंपरा और व्यक्तिगत प्रतिभा (ट्रेडीशन एंड इंडिविजुअल टैलेंट) नामक पुस्तक सन 1919 में प्रकाशित हुई थी। इसी क्रम में उनके दो निबंध "द परफेक्ट क्रिटिक" और "इंपरफेक्ट क्रिटिक" प्रकाशित हुई थी। यह सारे निबंध सन 1920 में प्रकाशित इलियट की पुस्तक "द सेक्रेट वर्ल्ड" में संकलित है। इलियट वास्तविक ख्याति 'द वेस्टलैंड' द्वारा प्राप्त हुई। इलियट पर एजरा पाउंड फ्रांसीसी प्रतीकवादी कवि का प्रभाव देखा जा सकता है।

टी.एस.इलियट के काव्य सिद्धांत :

समीक्षा के क्षेत्र में इलियट के विचारों ने एक क्रांति उत्पन्न कर दी। उनके विचारों ने पाश्चात्य समीक्षा को झकझोर कर रख दिया। उनके विचार विवादास्पद भी रहे हैं। टी.एस.इलियट कवि और आलोचक दोनों ही रूपों में आधुनिक अंग्रेजी साहित्य में विख्यात है। अपने आलोचनात्मक निबंधों में इन्होंने जिन काव्यगत विशेषताओं और सिद्धांतों का उल्लेख किया है उन्हीं को अपने काव्य का व्यवहारिक रूप प्रदान किया है। अंग्रेजी साहित्य में चले आ रहे स्वच्छतावाद खंडन करते हुए क्लासिकल मत का प्रतिपादन किया।

निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत :

इलियट ने साहित्य के प्रमुख दो सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। १ परंपरा एवं २ निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

इलियट निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत अपने भीतर भारतीय रस सिद्धांत के साधारणीकरण को समेटे हुए हैं। जिसमें कलाकार, नाटककार और अभिनेता के कौशल से व्यक्तिगत भाव सामान्य सर्वसाधारण के भाव में बदल जाते हैं। रससूत्र के व्याख्याकार भट्टनायक और अभिनव गुप्ता ने इसे मानसिक प्रक्रिया का विश्लेषण कहा है। टी.एस.इलियट का मानना था कि कवि को वैज्ञानिक के समान इंपर्सनल होना चाहिए। इलियट का यह सिद्धांत उनके परंपरा या इतिहास बोध के सिद्धांत का विरोधी नहीं है पर उसी का विकास क्रम है।

इलियट का मत है कि कवि अतीत की परंपरा को अर्जित करके उसे आधुनिक बोध के परिप्रेक्ष्य में परिवर्तित और विकसित करता है। इस क्रम में वह अपने व्यक्तित्व को उसके प्रति पूर्ण समर्पित कर देता है। इस स्थिति में कविता निजी या व्यक्तित्व भाव का प्रकाशन न होकर सार्व भौमिक हो जाती है। अपने सिद्धांत को समझाने के लिए एक वैज्ञानिक प्रक्रिया का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि ऑक्सीजन और सल्फर डाइऑक्साइड के कक्ष में यदि प्लेटिनम का तार डाल दिया जाए तो ऑक्सीजन और सल्फर डाइऑक्साइड मिलकर सल्फर एसिड बन जाता है। लेकिन प्लैटिनम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और न एसिड में प्लेटिनम का कोई चिह्न दिखाई देता है"।१ कवि का मन भी प्लैटिनम का तार है। व्यक्तिगत भावों की कला अभिव्यक्ति नहीं है। कवि के पास अभिव्यक्त करने के लिए कोई व्यक्तित्व नहीं होता। एक विशिष्ट माध्यम होता है व्यक्तित्व नहीं।

व्यक्तित्व और माध्यम शब्दों से ही व्यक्ति और निर्वैयक्ति कविता का अंतर स्पष्ट है। जिस तरह सृष्टि का करता ईश्वर है किंतु वह दिखाई नहीं देता उसी तरह कवि कविता की रचना अवश्य करता है किंतु वह पूरी रचना में दिखाई नहीं देता। कवि में अपनी सृष्टि में विलुप्त होने की योग्यता और क्षमता होनी चाहिए। कवि अपनी तीव्र संवेदना एवं ग्रहण क्षमता से अन्य लोगों की अनुभूतियों को इस प्रकार ग्रहण करता है कि वह अनुभूतियां उसकी निजी अनुभूतियां प्रतीत होती है किन्तु अनुभूतियों को वह इस प्रकार अभिव्यक्त करता है कि वह सभी को ग्राह्य होता है। यह विचार भारतीय काव्यशास्त्र में साधारणीकरण के सिद्धांत को व्यक्त करता है।

इलियट ने दो प्रकार निर्वैयक्तिकता स्वीकार की है। एक प्राकृतिक और दूसरी विशिष्ट। इलियट साहित्य की रचना के लिए तीन गुणों की आवश्यकता पर बल दिया।

१. मस्तिष्क की प्रौढ़ता, २. शील प्रौढ़ता 3 भाषा की प्रौढ़ता

इलियट के अनुसार १. मस्तिष्क की प्रौढ़ता की प्राप्ति के लिए कवि को सभ्य जातियों के सांस्कृतिक विकास और सभ्यता के इतिहास का अध्ययन करना चाहिए। अर्थात उसे अतीत का ज्ञान होना चाहिए। शील प्रौढ़ता से तात्पर्य चरित्र निर्माण से है जबकि भाषा की प्रौढ़ता से उच्च भाषा ज्ञान होना चाहिए। इलियट ने 'कविता के तीन स्वर' नामक भाषण में काव्य के तीन स्वर माने है। प्रथम स्वर वह है जिसमें कवि स्वयं से बात करता है, द्वितीय स्वर वह है जिसमें श्रोताओं से बात करता है और तृतीय स्वर वह है जिसमें वह स्वयं न बोलकर अपने पात्रों के माध्यम से बोलता है। प्रथम प्रकार के स्वर में कवि का लक्ष्य अपने भार से छुटकारा पाना है, क्योंकि बिना कहे वह रह नहीं सकता।

डॉ. भागीरथ मिश्र के अनुसार – टी. एस. इलियट का निर्वैयक्तिकता सिद्धांत भारतीय रस सिद्धांत के साधारणीकरण को समेटे हुए है"।

रामचंद्र तिवारी के अनुसार – इलियट ने निर्वैयक्तिकता सिद्धांत में आत्मनिष्ठ साहित्य के स्थान पर वस्तुनिष्ठ साहित्य पर बल दिया है।"

परंपरा विषयक सिद्धांत :

परंपरा से इतिहास का बोध होता है। परंपरा अतीत की सांस्कृतिक विकास की रूपरेखा को प्रस्तुत करती है। परंपरा हमारे हृदय में जाति समाज देश साहित्य के प्रति लगाव की भावना उत्पन्न करती है। साहित्यकार की दो भूमिका होती है- वह परंपरा से कुछ लेता है और परंपरा को कुछ देता है। कोई भी रचनाकार या कलाकार अपनी परंपरा से अलग हटकर रचना नहीं कर सकता है। परंपरा रचनाकार की रचना को प्रभावित करती है। प्रत्येक युग का साहित्य अपनी परंपराओं से प्रभावित रहता है। हिन्दी साहित्य के प्रमुख आलोचक रामचंद्र शुक्ला का कथन है कि प्रत्येक देश का साहित्य वहां की जनता की चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब होता है"। चित्तवृत्ति का संचित प्रतिबिंब को परंपरा से जोड सकते हैं। इलियट का मत है कि परंपरा का संबंध संस्कृति से होता है। संस्कृति में किसी जाति या समुदाय के जीवन कला दर्शन साहित्य आदि के उत्कृष्ट अंश रहते हैं। वस्तुतः अतीत के आलोक में ही वर्तमान के स्वरूप का सम्यक अध्ययन किया किया जा सकता है। इलियट ने परंपरा का व्यापक अर्थ दिया है। उन्होंने लिखा है कि व्यक्ति

परंपरा के साथ जन्म नहीं लेता उसे सायास ग्रहण करना पड़ता है। उसकी सिद्धि के लिए मेहनत जरूरी है। यह लेखक को उसके समय, स्थान एवं समकालीनता का परिचय देती है। कोई भी कवि या कलाकार अकेले अपना कोई अर्थ नहीं रखता है।

परंपरा से इलियट का मतलब इतिहासबोध है। परंपराबोध का दूसरा इतिहास भावना नाम है। जिसमें अतीत का नहीं उसकी वर्तमानता का ज्ञान भी समाविष्ट है। अर्थात कोई कृति जिस समय में लिखी गई और आज जिस माहौल में वह पढी जा रही है, उसके अलग-अलग किंतु समांतर युगबोध ही इतिहास बोध है। जैसे- तुलसीदास को पढ़ते हुए उनके समय और समाज की संवेदनशीलता, रचनाशीलता और आज के समय और समाज की देश-कालगत सापेक्ष भिन्न्ता की अलग-अलग किंतु पारस्परिक अंतर संबंध की पहचान ही इतिहास बोध है। जैसे आईना चेहरे के बहुत करीब हो चेहरा नहीं दिखेगा वह बहुत बहुत दूर हो तब भी नहीं दिखेगा।

परम्परा का अभिप्राय अंधानुकरण नहीं है, यदि परम्परा अन्धानुकरण हो जाय तो उस परम्परा को ग्रहण करना उपयुक्त नहीं अपितु उसकी तुलना में नव्यता या नूतनना ही उपयुक्त होती है। परम्परा की यह अवधारणा इलियट ने प्रस्तावित की किन्तु भारतीय परिदृश्य में भी परम्परा कोई जड़गत वस्तु नहीं है। हिन्दी साहित्यकार हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी परम्परा को गतिशील प्रक्रिया माना। उनके अनुसार "परम्परा का शब्दार्थ है, एक का दूसरे को, दूसरे का तीसरे को दिया जाने वाला क्रम है । 'परम्परा' जीवंत प्रक्रिया है जो अपने परिवेश के संग्रहत्याग की आवश्यकताओं के अनुरूप निरन्तर क्रियाशील रहती है। कभी-कभी इसे गलत ढंग से अतीत के सभी आचार-विचारों को बोधक मान लिया जाता है।" द्विवेदी जी के इस कथन का अभिप्राय यह है कि परम्परा एक सक्रिय और गतिशील प्रक्रिया है। इसे प्राचीनता का पर्याय नहीं माना जा सकता। यह जड़ और निष्क्रिय तत्व भी नहीं है अपितु इसमें एक प्रवाह मानता भी होती है। इलियट की परम्परा की अवधारणा इससे भिन्न नहीं है।

निष्कर्ष :

बीसवीं सदी की साहित्यिक आलोचना में इलियट ने साहित्यिक समीक्षा के महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए हैं। परंपरा सिद्धांत में परंपरा से इलियट का मतलब इतिहासबोध है। परंपराबोध का दूसरा इतिहास भाव नाम है। जिसमें अतीत का नहीं उसकी वर्तमानता का ज्ञान भी समाविष्ट है। निर्वैयक्तिकता सिद्धांत में इलियट ने आत्म निष्ठ साहित्य के स्थान पर वस्तुनिष्ठ साहित्य को महत्व प्रदान किया। एक नए कला को निवृत्ति घोषित किया उनके अनुसार काव्य रचना में कवि का मानस केवल माध्यम है। इलियट के अधिकांश मत भारतीय काव्यशास्त्रीय मतो विशेषतः रस सिद्धांत से मेल खाते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :


१. पाश्चाय काव्यशास्त्रः-डॉ .भागीरथ मिश्र
२. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धांत – गणपतिचंद्र गुप्त
३. पाश्चाय काव्यशास्त्रः- देवेन्द्रनाथ शर्मा
४. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धान्त और वाद;- डॉ .भागीरथ मिश्र
५. The Sacred Wood: Essays on Poetry and Criticism By T.S. Eliot